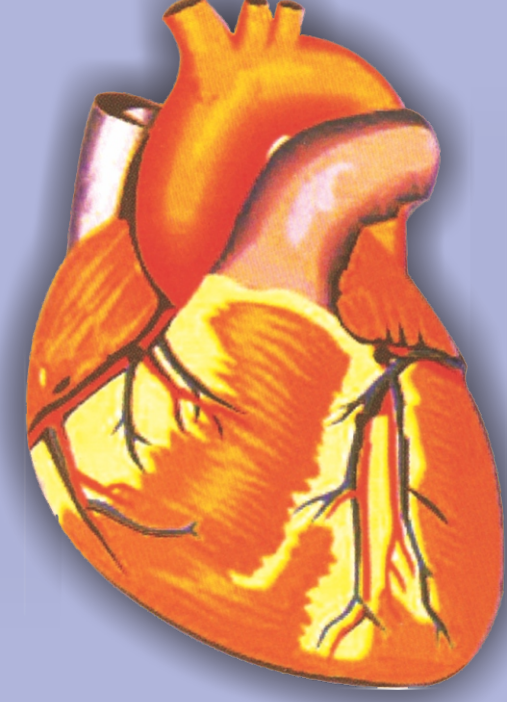


हृदय रोग

कोरोनरी
हार्ट डिज़ीज़
(सी. एच.डी.)



विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
61-65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लॉक के सामने, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
फोन: +91-11-28525520 / 28524457, फ़ैक्स: +91-11-28520748
ई-मेल : dg-ccras@nic.in
वेबसाइट : www.ccras.nic.in / www.indianmedicine.nic.in

© सी.सी.आर.ए.एस. 2014

यह दस्तावेज केवल प्रचार, प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरुपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।

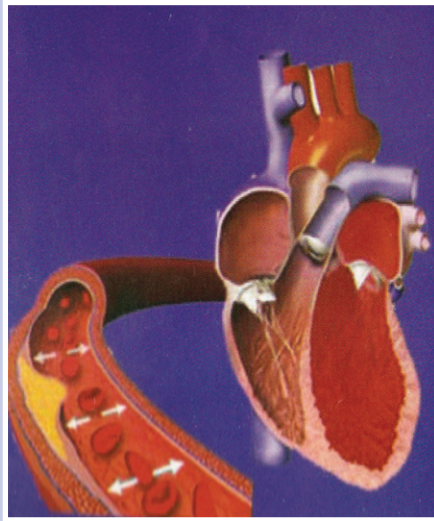


केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुश मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

हृदय रोग (सी.एच.डी) क्या है ?

दूषित हुए दोष हृदय में जाकर रस धातु को दूषित कर हृदयस्थ धमनी रोध उत्पन्न करते हैं।

कोरोनरी हार्ट डिज़ीज़ एक प्रकार का हृदयरोग है जो दोषों के प्रकोप के कारण उत्पन्न होता है। इसमें हृदय में वेदना का अनुभव होता है।



आयुर्वेदीय उपचार:

आयुर्वेदीय चिकित्सा विकृत हुए दोष पर निर्भर करती है। सामान्यतः निम्न चिकित्साएं की जाती हैं:

- अ) लंघन (उपवास)
- ब) पंचकर्म - जैसे वमन विरेचन इत्यादि

स्नेहशामक एवं हृच्छूलरोधी औषधियाँ जैसे पुष्करमूल एवं गुग्गुलु द्वार लाक्षणिक चिकित्सा भी लाभदायक है।



इसके क्या कारण है ?

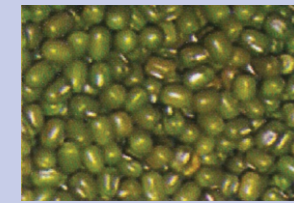
आयुर्वेद विकृत आहार एवं जीवन शैली को हृदय रोगों का प्रमुख कारण मानता है। कुछ अन्य कारण इस प्रकार हैं:-

- शारीरिक/मानसिक तनाव
- खाए गए भोजन के पचने से पहले पुनः भोजन करना।
- अधारणीय वेगों को धारण करना।

इसके लक्षण है ?

हृदय रोग (सी.एच.डी) निम्नलिखित किसी प्रकार से लक्षित हो सकता है:

- श्वास लेने में कष्ट।
- शरीर का वर्ण विकृत होना।
- जी मिचलाना।
- छाती में दर्द का होना।

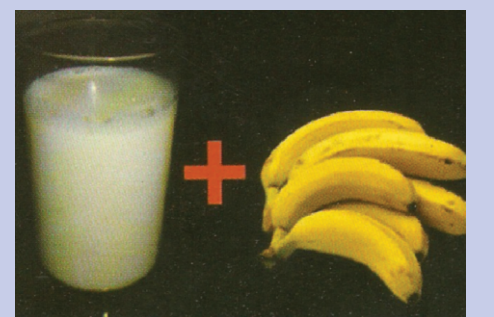


✓ पथ्य (क्या करें)

- ✓ कुछ खाद्य पदार्थ जैसे पुराने चावल, मूंग दाल, कुलथ दाल, कद्दू, अदरक, लहसुन, प्याज एवं गुड़ आदि।
- ✓ फल जैसे अनार, अंगूर, नारियल इत्यादि।
- ✓ ध्यान एवं नियमित योग साधना।

✗ अपथ्य (क्या न करें)

- ✗ विरुद्ध आहार जैसे मछली एवं दही, केला एवं दूध इत्यादि से परहेज करें।
- ✗ विलासपूर्ण जीवन शैली मत अपनाएं।
- ✗ क्रोध, चिंता एवं भय युक्त मत रहें।
- ✗ अधारणीय वेगों को धारण मत करें।



सी.सी.आर.ए.एस. का योगदान

- पुष्कर गुग्गुलु का हृच्छूलरोधी एवं स्नेहशामक निदान चिकित्सात्मक अध्ययन संदर्भ : आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका अंक 12, नं. 1-2, पृष्ठ सं - 1-18